© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 06 | July – September 2017

सूरदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सीमा, रिसर्च स्कॉलर

परिचय : सूरदास के जन्म , स्थान , परिवार आदि के बारे में कई विद्वानों ने अलग –अलग मत व्यक्त किये हैं | सूरदास की कृतियों के अन्तःसाक्ष्य के रूप में बहुत कम जानकारी उपलब्ध हो पाती है | बाह्य साक्ष्यों के आधार पर जो सामग्री उपलब्ध है उसमे भी प्रमाणिकता का अभाव है | नाभादास कृत 'भक्तमाल' ; गोकुलनाथ कृत 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' ; यदुनाथ कृत 'वल्लभ दिग्विजय' तथा 'निजवार्ता'के आधार पर उनके सन्दर्भ में कई जानकारियाँ उपलब्ध होती हैं | सूरदास के जन्म स्थान के सन्दर्भ में दो स्थानों की चर्चा की जाती है – रुनकता एवं सीही | कुछ विद्वान आगरा –मथुरा मार्ग पर स्थित रुनकता ग्राम को इनका जन्म स्थान मानते हैं | सीही के विषय में अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय प्रमाण उपलब्ध हैं | डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा तथा डॉ. हरवंशलाल शर्मा आदि अधिकांश विद्वान दिल्ली के निकट सीही नामक स्थान को सूरदास का जन्मस्थान मानते हैं | मिश्रबंधुओं तथा आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सूरदास जी का जन्म सन 1483 ईस्वी और मृत्यु सन 1563 ईस्वी मानी है | जन्म के समय के बारे में सूरदास की कृतियों से भी कुछ जानकारी उपलब्ध होती है ,इसके आधार पर देखा जाये तो उनका जन्म सन 1478 ईस्वी और मृत्यु सन 1583 ईस्वी ठहरती है |

सूरदास जी के जन्मांध होने या बाद में अंधे होने के विषय में अनेक मत प्रचलित हैं | वार्ता - ग्रंथों के अनुसार सूर जन्म से ही अंधे थे | उनके कुछ पदों में भी इस जन्मान्धता का जिक्र हुआ है | सूर पर शोध करने वाले विद्वानों ने यह तथ्य प्रतिपादित किया है की गऊघाट पर सूरदास की मुलाकात महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई | वल्लभाचार्य के कहने पर सूर ने बड़ी तन्मयता के साथ दैन्य भाव का पद - " प्रभु हौं सब पतितन को टीको " गाया | इसे सुनकर वल्लभाचार्य ने सूरदास से कहा –"जो सूर हैके ऐसे काहे को घिघियात है ,कछु भगवत लीला वर्णन करि" | यहीं से सूरदास जी के साहित्यिक जीवन में कृष्ण की बाल लीला का नया अध्याय शुरू होता है | वल्लभाचार्य ने सूरदास को अपने सम्प्रदाय में दीक्षित किया और श्री मद्भागवत के आधार पर लीला पद रचना के लिए प्रवृत्त किया | तत्पश्चात सूरदास श्रीनाथ जी के मंदिर में गायन करने लगे | उन्होंने अपनी संगीतमय वाणी के माध्यम से कृष्ण की बाल लीलापूर्ण भक्ति की ऐसी रसपूर्ण अविरल धारा प्रवाहित की जिसका अवगाहन कर आम मनुष्य अपनी आध्यात्मिक तृषा को बुझाता है और भक्ति के आनंद में डूबकर कृष्णमय हो जाता है | सूर विभिन्न विधाओं के ज्ञाता थे | उनकी प्रसिद्धि एक उत्कृष्ट गायक , कवि और महात्मा के रूप में दूर –दूर तक फैलती गई | उनकी ख्याति के चलते सम्राट अकबर ने मथुरा में इनसे भेंट की थी | गोस्वामी तुलसीदास जी भी सूरदास जी से मिले और उनके वात्सल्य सम्बन्धी पदों से प्रभावित भी हुए | 'गीतावली' में राम की जिस बाल लीला का वर्णन तुलसीदास जी ने किया है उस पर स्पष्टतः सूरदास जी का प्रभाव परिलक्षित होता है |

सूरदास जी की रचनाएँ : सूरदास जी की कई रचनाएँ बताई जाती हैं | डॉ.दीनदयाल गुप्त के अनुसार सूरदास द्वारा रचित पुस्तकों की संख्या पच्चीस है जिनमें सूरसागर (महाकाव्य),सूरसारावली, साहित्य लहरी , सूर पचीसी , सूर रामायण ,सूरसाठी और राधारसकेलि प्रकाशित हो चुकी हैं | 'सूरसागर' उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना है| इस रचना को सूरदास का कीर्ति -स्तम्भ माना जाता है | इस महाकाव्य में श्रीमद्भागवत के आधार पर द्वादश (बारह) स्कंधों में सवा लाख पदों का सृजन किया गया है किन्तु अब तक लगभग छः हजार पद ही उपलब्ध हैं | इन पदों में महात्मा सूरदास ने श्री कृष्ण की बाल – लीलाओं , गोपी–प्रेम , गोपी–विरह और उद्धव-गोपी संवाद का बड़ा ही मनोवैज्ञानिक और सूक्ष्म वर्णन किया है | सूरसागर में श्रृंगार एवं वात्सल्य का अद्भुत संयोजन किया गया है | सूरसागर के 'भ्रमरगीत' प्रसंग में गोपियों की वाग्विदग्धता देखते ही बनती है | अपने तर्कों और संवेदनशील प्रश्नों के माध्यम से गोपियों ने तमाम मानवीय सन्दर्भों को एक व्यापक विजन के साथ प्रस्तुत किया है |गोपियों की कृष्ण-निष्ठा के समक्ष उद्धव का अहंकार चूर –चूर हो जाता है | गोपियों की प्रेममूलक भक्ति का यह नवीन और मौलिक संसार 'सूरसागर' की उपलब्धि है | 'सूरसारावली' को सूरसागर का सार माना जाता है | इस रचना में 1107 पद संगृहीत किये गए हैं | 'साहित्य लहरी' सूरदास के 'दृष्टिकूट' पदों का संग्रह है, इसमें अर्थगोपन शैली में राधा –कृष्ण लीलाओं , नखशिख ,रस ,नायिका- भेद आदि का वर्णन किया गया है |अलंकार निरूपण की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ महत्वपूर्ण माना जाता है | इस ग्रन्थ के 112वें पद में सूर का वंश परिचय दिया गया है जिसमें उन्हें चन्दबरदाई का वंशज माना गया है किन्तु विद्वानों ने इस अंश को प्रक्षिप्त माना है .

कृष्ण काव्य- परंपरा और सूरदास- हिंदी में कृष्ण काव्य परम्परा को चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने का श्रेय सूरदास को दिया जाता है | कृष्ण काव्यधारा को प्रवाहित करने वाला प्रथम कवि विद्यापति को माना जाता है किन्तु विद्यापति ने कृष्ण काव्य की जिस माधुर्य भावमयी रागात्मक धारा का आरम्भ किया उस पर जयदेव कृत 'गीतगोविन्द' का प्रभाव मना जाता है | डॉ. रामकुमार वर्मा के मतानुसार कृष्ण काव्य परंपरा का सूत्रपात जयदेव से ही मानना चाहिए | जयदेव का काव्य संस्कृत साहित्य के अंतर्गत लिखा गया है अतः हिंदी में विद्यापति ही इस परम्परा के प्रवर्तक हैं | विद्यापति के उपरांत हिंदी में कृष्ण काव्य परंपरा को भारतव्यापी बनाने का श्रेय सूरदास को दिया जाता है | आचार्य रामचंद्र शुक्ल मानते हैं कि गीतिकाव्य की जो परंपरा जयदेव और विद्यापति से शुरू हुई वह श्रृंगार की परंपरा थी | वैसे विद्यापति और सूरदास के बीच में कोई श्रृंखला दिखाई नहीं देती ; ऐसा इसलिए भी कि विद्यापति ने मैथिली भाषा के अंतर्गत कृष्ण काव्य को अपने गीतों में संजोया है और सूरदास ने ब्रज भाषा के अंतर्गत भक्ति भावना से युक्त इस प्रेम तत्व का गान किया है | सूरदास पर विस्तृत शोध कर चुके कई विद्वानों का मत है कि सूर विद्यापति की परंपरा में न आकर ब्रज के उन लोग गीतकारों की परंपरा में आते हैं जिनके गीत सूर से पहले भी ब्रज प्रदेश के घर –घर में मिलते हैं तथा जो गीत कृष्ण की भक्ति -भावना से भी परिपूर्ण हैं | आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं -"सूरसागर किसी चली आती हुई गीतिकाव्य परंपरा का चाहे वह मौखिक ही रही हो –पूर्ण विकास सा प्रतीत होता है |"

सूरदास के उपरांत हिंदी कृष्ण काव्य की एक सुदीर्घ परंपरा रही है जिसमें सूरदास के अनुसरण पर ही श्रृंगार एवं वात्सल्य रस से परिपूर्ण मधुर गीत गाए गए हैं | इसमें सर्वप्रथम 'अष्टछाप' के कवि आते हैं | अष्टछाप की स्थापना सन 1565 ईस्वी में गोसाई विट्ठलनाथ ने की थी | अष्टछाप आठ कवियों के समूह को कहा गया जिसमें वल्लभाचार्य के चार शिष्य – कुम्भनदास , परमानंददास, सूरदास ,कृष्णदास तथा विट्ठलनाथ के

चार शिष्य –गोविंदस्वामी ,छीतस्वामी ,चतुर्भुजदास ,नंददास शामिल थे | इन कवियों में सबसे ज्येष्ठ कुम्भनदास थे और सबसे कनिष्ठ नंददास | वल्लभाचार्य तथा गोसाईं विट्ठलनाथ के आग्रह एवं अनुरोध पर ही इन अष्टछाप कवियों ने विभिन्न राग –रागनियों में कृष्ण भक्ति सम्बन्धी गीतों का प्रणयन किया | अष्टछाप के सभी कवि ब्रजभाषा के अंतर्गत कृष्ण काव्य के प्रणेता माने जाते हैं | इनके गीत हिंदी साहित्य की अनुपम निधि माने जाते हैं | साहित्यिक दृष्टि से नंददास एक श्रेष्ठ कवि थे | इनके द्वारा रचित 'रासपंचाध्यायी'तथा 'भंवरगीत' भक्तिकाल की अनुपम कृतियाँ मानी जाती हैं | मीराबाई कृष्ण भक्ति के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाली महत्वपूर्ण कवयित्री हैं | उन्होंने दाम्पत्य–भाव में विभोर होकर कृष्ण भक्ति सम्बन्धी मधुर एवं मर्मश्पर्शी गीतों की रचना की | मीराबाई के उपरांत नरोत्तमदास , हरिराय ,गोविन्ददास ,स्वामी हरिदास तथा हितहरिवंश आते हैं | हितहरिवंश ने 'राधावल्लभ सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किया जिसका मुख्य केंद्र वृन्दावन है | आगे श्री भट्ट, व्यासजी ,निपट निरंजन , लक्ष्मीनारायण, बलभद्र मिश्र , कादिर , मुबारक, रसखान सरीखे तमाम कृष्ण भक्तों ने कृष्ण भक्ति भावधारा एवं कृष्ण काव्य परंपरा के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया | सूरदास का प्रभाव इस पूरी कृष्ण- काव्य परंपरा में स्पष्टतः दिखाई देता है | अधिकांश कवियों ने कृष्ण के बाल एवं किशोर रूप पर मुग्ध होकर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं | सूरदास जी ने न केवल कृष्ण भक्ति को सर्व व्यापक बनाया अपितु समूचे भक्ति आन्दोलन को नया आयाम दिया |

निष्कर्ष

सूर की कविता भक्ति आन्दोलन की सामजिक –सांस्कृतिक परंपरा में अपना विशिष्ट स्थान रखती है | वह अपने काव्य के माध्यम से तत्कालीन समाज और जीवन की अव्यवस्था के बीच वात्सल्य का विधान रचते हैं | वात्सल्य के माध्यम से बालजीवन के विभिन्न अनछुए पहलुओं को उभारते हुए सूरदास ने साहित्य में एक नए क्षेत्र की प्रस्तावना लिखी | उनका साहित्य अपने युग की सीमाओं तथा अंतर्विरोधों के बावजूद उस उग की मानसिकता का अतिक्रमण करता है | वह अपने युग के विलास जर्जर समाज को वृन्दावन के उन्मुक्त संसार में ले जाते हैं | प्रेम चित्रण के माध्यम से स्त्री –पुरुष के बीच सामजिक भेद ख़त्म करने की कोशिश करते हैं | गोपियाँ उस पारिवारिक मान मर्यादा को भी तोड़ डालती हैं जिनसे पुरुष प्रभुत्ववादी पारिवारिक-सामाजिक मूल्यों का निर्माण हुआ है | नारी स्वतंत्रता के पक्षधर सूर ने खुले मन से एक ऐसी स्त्री -छवि गढ़ी है जो अपने आत्मसम्मान और अपनी अस्मिता के प्रति बेहद सचेत है | सूरदास के काव्य में स्त्री का सहज ,स्वतन्त्र, और तेजस्वी रूप मिलता है | गोपियाँ स्वतंत्र हैं इसीलिये सामाजिक समता का प्रयोग करती हैं | सूर ने यशोदा और गोपियों के माध्यम से स्त्री की बनी बनाई परंपरागत क्षवि को तोड़ने की महत्वपूर्ण कोशिश की है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :

[1].http://vle.du.ac.in/mod/book/view.php?id=**10284**&chapterid= **17293**
[2].सूरदास के भ्रमर-गीत में छिपा है अध्यात्मिक पक्ष
[3].ख्याति सोनी - लोकजीवन के प्रखर गायक अष्टछाप के कवि सूरदास
[4].http://www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=**720**&pageno=**1**
[5].http://www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=**685**&pageno=**2**